अध्याय : 4

विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी मनोविज्ञान

अध्याय : 4

विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी मनोविज्ञान

श्री विष्णु प्रभाकर हिन्दी साहित्य जगत् में एक सफल मनोवैज्ञानिक नाटककार माने जाते हैं। इन्होंने अपने नाटकों में नारी मनोविज्ञान का सफल चित्रण किया है। नाटक और मनोविज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध है। मनोविाान का केंद्र मानव मन है और नाटक में मानव मन के विभिन्न क्रिया-व्यापारों का यथार्थ चित्रण पाया जाता है। विष्णु प्रभाकरजी के नाटकों में मनोविज्ञान की शैली में मानव मन के द्वन्द्व को चित्रित किया गया है।

मनोविज्ञान मानव व्यवहार का ही विज्ञान है, जिसमें मानव जीवन के अनुभव और प्रवृत्तियों का अध्ययन किया जाता है। अतः मनोविज्ञान मानव मन के विभिन्न भावों और विचारों का विज्ञान है। जिसमें मानव मन के जटील भावनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण दृष्टिगोचर होता है। आलोच्य युग में हिन्दी नाटक पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों से प्रभावित रहा और आलोच्य युगीन नाटकों में मनोविश्लेषणात्मक प्रवृत्ति का विकास होता गया। इस प्रकार परिस्थिति के अनुसार हिन्दी नाट्यकारों का झुकाव मनोविज्ञान की ओर जाने लगा। "मानव जीवन, प्रकृति प्रेम, प्राचीन इतिहास, पुराण कथा आदि को आधार बनाकर नाट्य-सृजन होता रहा है जिन्हें आकर्षक एवं प्रभावी बनाने के लिए नाट्यकार स्वभावतः मनोविज्ञान का आश्रय लेता रहा। क्योंकि नाटक एक ऐसी साहित्यिक विधा है जिसमें जीवन का यथार्थ प्रतिबिम्बित होता है।"[1]

विष्णु प्रभाकरजी ने अपनी नाट्य-कृतियों में मनोविज्ञान के सूक्ष्माति-सूक्ष्म रूपों को उद्घाटित किया है। उनके नाटकों में आधुनिक युग की नारी के मानसिक असन्तुलन के चित्र मिलते हैं। उन्होंने अपनी नाट्य-कृतियों में नारी के सामाजिक जीवन की विभिनन समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए वर्तमान

जीवन के मध्यवर्गीय नारी के अन्तर्मन का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण किया है। अतः यह कहा जा सकता है कि विष्णु प्रभाकरजी नारी मनोविज्ञान के पारखी हैं। उन्होंने नारी के मन की पीड़ा और यातना को अपने नाटकों की मुख्य चेतना बनाकर नारी के द्वारा तत्कालीन सामाजिक जीवन के अभिशापों को उद्घाटित किया है।

आज के युग में प्रत्येक नारी मानसिक असन्तुलन के कारण बदल गयी है। उसके कई रूप हमें देखने मिलते हैं। वास्तव में नारी का व्यक्तित्व कई आवरणों में छिपा हुआ है। लेकिन जब नारी के मन में अन्तः संघर्ष होता है, तब वह अपनी दमित भावनाओं को खोलकर उस आवरण से बाहर निकलती है। इस प्रकार विष्णु प्रभाकरजी के नाटकों में नारी मन की गुत्थियों में उलझी हुयी दिखाई देती है। आपने अपने नाटकों में नारी मनोविज्ञान के कुछ पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है। जिसका अध्ययन हम निम्न प्रकार से करना चाहते हैं।

1· <u>ममत्व और प्रेम</u>

नारी की आंतरिक भावनाओं, संवेदनाओं, उसके अन्दर व्याप्त ममत्व, वात्सल्य और पवित्र स्नेह बंधन {प्रेम} की ओर विष्णुजी का अधिक मात्रा में ध्यान गया था। विष्णुजी नारी के इन्हीं मनोविज्ञान के पहलुओं के कारण नारी की सुन्दरता को निहार सके। उन्होंने अपने नाटकों में नारी को ममत्व एवं वात्सल्य की प्रेममयी मूर्ति के रूप में चित्रित किया है। जो नारी मनोविज्ञान की विशिष्टता है।

श्री विष्णु प्रभाकरजी ने "बन्दिनी" नाटक में उमा को ममतामयी नारी के रूप में चित्रित किया है। उमा अपनी बड़ी देवरानी सावित्री के बेटे अनु को बहुत चाहती है। मानो अनु उमा के आँखों का तारा बन गया है। क्योंकि उमा अब तक माँ नहीं बन सकी है। इसी कारण उमा को अनु दिले जान से प्यारा लगता है। अनु जब कोई शरारत करता है तो उमा को बहुत अच्छा लगता है। अनु अपनी माँ सावित्री से ज्यादातर उमा के पास ही रहता है। उमा उसके साथ बच्चा बन कर खेलती है। उसके साथ दौडती है, भागती है दोनों के खेल-कूद से सारे घर में शोर मच जाता है। वह अनु को बड़े प्यार से राजा बेटा कहती है। अनु अपनी चाची को तरह-तरह के सवाल करता है। लेकिन उमा उसके सवालों

का कुछ न कुछ जवाब देकर उसको समझाती है।

कालीनाथ के स्वप्न के कारण उमा देवी बन जाती है। आरती के समय उमा देवी पूजा मंच पर बैठी है। अनु अपनी चाची की ओर बड़ी उत्सुकता से देखता रहता है। वह उमा देवी के पास जाना चाहता है। लेकिन कालीनाथ उसे सख्ती से पकड़कर बाहर ले जाता है। यह सब देखकर उमा को दुःख होता है। वह भी अपने अनु से मिलने के लिए बेचैन है। एक दिन जब उमा अनु को धीरे से अपने पास बुलाती है, तो अनु अपने बाबा के भय से उमा के पास नहीं जाता। अनु भी अपनी चाची को देवी मानता है। तो उमा अनु को कहती है, "मैं देवी नहीं हूँ। मैं तो तेरी चाची हूँ। तू ऊपर से उतरकर इधर आ। जल्दी आ, मैं तो तेरे लिए तडप रही हूँ।"[2] इतने में अनु किसी को आते देखता है और भाग जाता है। उमा उसे पागलों की तरह पुकारती रहती है। सावित्री उमा को अनु के न आने का कारण बताती है। तो उमा बड़ी दुखी होकर सावित्री जीजी से कहती है - "यही तो वह मुझसे पुछ रहा था। यह सब क्या है जीजी ? क्या अब मुझे किसी को प्यार करने का अधिकार नहीं रहा। मुझे अब कोई प्यार नहीं कर सकेगा। नहीं कर सकेगा।"[3] दिन-ब-दिन उमा भी दृढ हो जाती है। भावना के सागर में डूबकर अपने को देवी मानने लगती है। सभी के दुख, दर्द दूर कर देती है। सभी लोग श्रद्धा से उसके दर्शन और पूजा करने लगते हैं।

एक दिन अनु बीमार पड़ जाता है। वह ज्वर के कारण तड़प रहा है। लेकिन कालीनाथ अपनी अंधी श्रद्धा के कारण अनु को वैद्य को न दिखाकर उमा के पास ले जाते हैं। लेकिने उमा अनु को नहीं बचा पाती। अनु के जाते ही उमा की आँखें खुल जाती है। वह बार-बार अनु को सहलाती है। वह आदेश देती हुई कहती है - "नहीं सुन रहे, यमराज, आप मेरा आदेश नहीं सुन रहें ? मैं कहती हूँ मेरे अनु को लौटा दो, मुझे बहुत प्यारा है वह। उसके बिना मैं जी नहीं सकूंगी। उसे लौटाना ही होगा।"[4] अब तो उमा का आदेश कोई नहीं सुन रहा था और न ही वह अपने अनु के प्राण वापस ला सकती थी। अनु के प्रति उमा का ममत्व एवं वात्सल्य का भाव उसे पागल जैसा बना देता है। उसे अपने आप से नफरत हो जाती है। उसे लगता है कि मैंने ही अपने प्यार का गला घोंट दिया है।

अपने ही प्रिय की बलि चढ़ा दी है।

इस प्रकार उमा ममतामयी नारी है। वह हालात से मजबूर हो जाती है। उमा के दिल में इतनी ममता भरी हुई है कि वह अपने प्रिय के बिछुड जाने से आत्महत्या कर लेती है। अतः वह ममता एवं वात्सल्य की मूर्ति है।

"डॉक्टर" नाटक में विष्णुजी ने डॉ॰अनीला को वात्सल्य रस की धारा में बहती हुई दिखाया है। डॉ॰अनीला के मन में यद्यपि यह असन्तोष रहता है कि वह उपेक्षित और अपमानित है। लेकिन पत्नी के साथ वह एक माँ भी है। और माता का जीवन बालक के लिए ही होता है। डॉ॰अनीला अपनी छोटी बच्ची शशि से बहुत प्यार करती है। जब वह अपनी बच्ची शशि के प्यार में मग्न हो जाती है तो पति द्वारा दिये दुःख को वह भूल जाती है। पति ने उसको त्याग दिया, लेकिन शशि के प्यार का सहारा डॉ॰अनीला के पास है। अपने डॉक्टरी पेशे में वह मशहूर है, उसके पास बहुत काम रहता है। फिर भी जब भी अनीला को अपने जिगर के टुकड़े की याद आती है, तो वह फौरन शशि से मिलने जाती है। जब डॉ॰केशव की तार से उसे पता चलता है कि शशि के गिर जाने से दहिने पैर की हड्डी टूट गई है तो इस खबर से अनीला घबरा जाती है। उसे अपनी शशि की चिन्ता खाने लगती है। अपने हाथ का सब काम छोड़कर हवाई अड्डे पर जा पहुँचती है। इस प्रकार अनीला ममतामयी नारी है। अपनी सौत के बेटे गोपाल के प्रति भी उसके दिल में प्यार है और यही प्यार अनीला के दिल में बसी माता के मन को जागृत करता है। अनीला के इस मातृप्रेम से अन्य पात्र प्रभावित होते हैं। इस प्रकार अनीला के मन में ममता एवं वात्सल्य का भाव है।

श्री विष्णु प्रभाकरजी ने प्रेम सम्बन्ध को बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया है। आपने "नवप्रभात" नाटक में संघमित्रा और कलिंग के युवराज कुमार के आदर्श प्रेम का चित्रण किया है। संघमित्रा अशोक की छोटी बहन है, फिर भी अपने भाई के दुश्मन कुमार से प्रेम करती है। जब मगध की सेना सम्राट अशोक का जयघोष करती हुई आती है तो संघमित्रा को अपने प्रेमी कुमार की चिन्ता खा जाती है। उसके बारे में रेवा और संघमित्रा बातचीत करती हैं -

रेवा : शायद कुमार पकड़े गए हैं।

संघमित्रा : कुमार पकड़ लिये गए हैं ? क्या सच कुमार पकड़ लिए गए ? चलो, रेवा। चलो। महामात्य से पूछे कि क्या सच ही कुमार पकड़ लिए गए हैं ?

इस तरह कहती हुई संघमित्रा शीघ्रता से जाती है। उसे पुकारती हुई रेवा पीछे दौडती है -

रेवा : देवी····देवी····कुमार के पकड़े जाने की बात सुनकर देवी संघमित्रा कितनी उव्देलित हो उठी है। शत्रु हो जाने पर भी कुमार के प्रति उनका प्रेम कम नहीं हुआ है। प्रेम भी कितनी अद्‌भुत, कितनी पवित्र भावना है। सब लोग प्रेम ही क्यों नहीं करने लगते ? ओह। कुमारी कैसी भागी जा रही है। चलूँ मैं भी देखूँ····"[5]

जब सम्राट अशोक कलिंग कुमार के भाग्य का निर्णय करना चाहते हैं तो संघमित्रा चिन्ता करती है। वह अशोक को बताती है कि हृदय की विशालता और उदारता का नाम ही शौर्य है। अशोक कहता है, "हृदय की विशालता का नाम शौर्य है। संघमित्रा। मैं जानता हूँ कि तुम क्या कहना चाहती हो ? तुम कलिंग के युवराज से प्रेम करती हो। तुम मुझे धोखा नहीं दे सकती। पर युवराज मेरा शत्रु है और तुम मेरी बहन।"[6]

सम्राट अशोक कलिंग कुमार को झुकाना चाहते हैं। लेकिन स्वाभिमानी कुमार सम्राट को सलाम तक नहीं करता। लेकिन संघमित्रा अपने प्रेमी को बचाने की पूरी कोशिश करती है। अशोक भी कहता है कि संघमित्रा चाहे तो युवराज को अपना पति वरण कर सकती है। लेकिन युवराज इस बात के लिए तैयार नहीं होते। वह सम्राट से अपने प्राणों की भिक्षा नहीं माँग सकता और न ही उसे किसी की दया चाहिए। कुमार भी संघमित्रा को दिलो जान से चाहता है। अपने जीवन से बढ़कर प्रेम करता है। लेकिन उससे पहले वह एक देशप्रेमी है। संघमित्रा एक सच्ची प्रेमिका है। वह चंडगिरि से समय माँगती है। वह जल्द ही युवराज के मुक्ति का संदेश सुनना चाहती है। इतना ही नहीं, वह अपने प्रेम के लिए

भिक्षु उपगुप्त की शिष्या बन जाती है। युवराज भी संघमित्रा का अपने लिए इतना त्याग देखकर चकित हो जाता है और अंत में कलिंग के रक्तयज्ञ में अपने रक्त की पूर्णाहुति देकर अपने प्रेम को सम्पूर्ण कर देता है। संघमित्रा भी अपने प्रियतमा के लिए आत्महत्या करके अपने पवित्र प्रेम का सबूत देना चाहती है लेकिन चंडगिरी उसे बचाता है। संघमित्रा राजकुमारी को छाती से लगाकर शोक का वहन करती है। इस तरह संघमित्रा अपने प्रियतम के जाने से दुखिनी बनी हुई है।

2· <u>आत्महीनता</u>

नाटककार विष्णु प्रभाकरजी ने अपने नाटकों में मनोविज्ञान के धरातल पर नारी के आत्महीनता का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। आपने "डॉक्टर" नाटक में डॉ·अनीला की आत्महीनता भावना का चित्रण किया है। डॉ·अनीला का पहला नाम मधुलक्ष्मी है। शादी से पहले वह एक अशिक्षित गँवार लडकी थी। मधुलक्ष्मी का विवाह सतीशचन्द्र शर्मा से होता है। उस वक्त सतीशचन्द्र शर्मा विद्यार्थी ही थे। और मधुलक्ष्मी एक भोलीभाली सामान्य नारी थी। कुछ दिनों के बाद सतीशचन्द्र अपनी पढ़ाई पूरी करके इंजिनियर बन जाता है। तब सतीशचन्द्र को मधुलक्ष्मी से अपना सामाजिक दर्जा ऊँचा लगता है। लेकिन मधुलक्ष्मी विवाहित होने के कारण अपने उसी स्तर पर रहती है। अब सतीशचन्द्र को मधुलक्ष्मी अपने सामाजिक स्तर के अनुरूप नहीं लगती क्योंकि अपने स्तर के समाज में मधुलक्ष्मी घूम-फिर नहीं सकती थी, बैठ-उठ नहीं सकती थी, खा-पी नहीं सकती थी। अतः मधुलक्ष्मी सतीशचन्द्र शर्मा के अनुरूप नहीं थी। इसी कारण सतीशचन्द्र शर्मा मधुलक्ष्मी का त्याग कर देता है। मधुलक्ष्मी परित्यक्ता नारी होने के कारण आत्महीनता की भावना प्रबल हो जाती है। इस नाटक में डॉ·अनीला की हीनत्व भावना ही प्रतिशोध भावना को उत्तेजित करती है और इस भावना से वह परित्यक्ता होने पर भी अशिक्षित से डॉक्टर बन जाती है। लेकिन सतीशचन्द्र की दूसरी शादी के कारण उसके प्रति जबरदस्त घृणा, तिरस्कार उसके मन में निर्माण होता है और आत्महीनता का भाव उच्च कोटि तक पहुँचता है।

"श्वेतकमल" नाटक की नीलिमा में भी आत्महीनता का भाव दिखाई देता है। वह एक गरीब परिवार की लडकी है। उसकी बड़ी बहन बिन्दू कुछ कमाकर लाती है, लेकिन उससे परिवार का गुजारा नहीं होता, तो मनमौज करना तो दूर की बात थी। गरीबी की हालत से न मनपसन्द कपडा पहन सकती है, न अच्छे ढंग का खाना खा सकती है। नीलिमा अपनी सहेली पूनम को देखती रहती है। पूनम सुन्दर एवं आकर्षक लड़की है। पूनम आकर्षक और सुन्दर कपड़े पहन कर कॉलेज आती है। मॉडेलिंग का काम करती है। इससे नीलिमा प्रभावित होती है। वह भी चाहती है कि पूनम की तरह सुन्दर कपड़े पहनकर कॉलेज आये। लेकिन अपनी गरीबी हालात की वजह से उसके सारे सपने चकनाचूर हो जाते हैं। वह अपनी माँ से कहती है - "मैंने तुमसे कहा ही क्या है जो तुम इतनी बिगड़ रही हो। कितनी पुरानी हो गयी है यह बेलबॉटम। कभी का बीत गया इसका फैशन। पहनने शर्म आती है। एक पठानी सूट के लिए कहते-कहते जीभ घीस गयी। पर हमारे भाग्य में यह सब कहाँ हम तो अभागे हैं अभागे।" इस तरह नीलिमा की दमित आशाओं के कारण उसकी हीनत्व भावना प्रबल होती दिखाई देती है।

3· <u>तीव्र चुनौती एवं प्रतिशोध भावना</u>

श्री विष्णु प्रभाकरजी ने "डॉक्टर" नाटक में नारी के गहन अन्तर्द्वन्द को चित्रित किया है। डॉ·अनीला इस नाटक का प्रमुख नारी पात्र है। डॉ·अनीला का पुराना नाम मधुलक्ष्मी है, जिसका विवाह सतीशचन्द्र शर्मा से होता है। विवाह के बाद सतीशचन्द्र इंजिनिअर के उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है। तो मधुलक्ष्मी उसे सामान्य पढ़ी-लिखी होने के कारण अपने सोसायटी के काबील नहीं लगती। इसी कारण सतीशचन्द्र मधुलक्ष्मी का त्याग करके दूसरी शादी कर लेते हैं। इस घटना से मधुलक्ष्मी के अन्तर्मन और चेतनमन में गहरा संघर्ष होता है, और वह अपने पति की तीव्र चुनौती को स्वीकार करती है। पति परित्यक्ता मधुलक्ष्मी के मन में प्रतिशोध की गहरी प्रतिक्रिया होती है। अपने भाई की मदद से पढ़-लिखकर मधुलक्ष्मी डॉक्टर बन जाती है। उस चुनौती के कारण अपने मधुलक्ष्मी नाम से बेहद घृणा होती है और वह डॉक्टर अनीला बन जाती है। वह अपना नर्सिंग होम स्थापित कर लेती है, जो जल्द ही रूग्णों का आशा स्थान बन जाता है। उसी

नर्सिंग होम में सतीशचन्द्र की दूसरी पत्नी एक प्राणघातक रोग से ग्रस्त होकर उपचार के हेतु लायी जाती है। इस बात का पता लगते ही डॉ·अनीला जख्मी नागीन की तरह फुत्कार उठती है -

अनीला : मैं पूछती हूँ कि इसे किसने दाखिल किया ? किसकी आज्ञा से····

सईदा : क्षमा करें दीदी। यह सब दादा ने किया है। एक बार तो उन्होंने मना कर दिया था पर·····

अनीला : मैं कहती हूँ कि इन्हें निकाल दो····

सईदा : दीदी।

अनीला : हां, मैं ठीक कहती हूँ कि इस मरीजा के लिए इस नर्सिंग होम में स्थान नहीं है।[7]

यह घटना अनीला के अन्तर्मन में तीव्र हलचल उत्पन्न कर देती है। मरीजा उषा का ऑपरेशन तो डॉ·अनीला को करना ही था। लेकिन ऑपरेशन करते वक्त अपनी सौत को मारकर शर्मा के गृहस्थ जीवन पर आघात करना चाहती है। डॉ·अनीला उसे तडपाना चाहती है। लेकिन एक ओर उसके मन में प्रतिहिंसा की भावना और दूसरी ओर एक ख्याति प्राप्त डॉक्टर होने के नाते उसकी कर्तव्य भावना में भयानक संघर्ष होता है। "उसके भीतर सतीशचन्द्र के प्रति तीव्र चुनौती एवं प्रतिशोध की भावना उदबुध्द होती है।"[8] लेकिन अनीला का भाई दादा मरीजा का ऑपरेशन सफल करके अहिंसात्मक बदला लेने के लिए कहता है। लेकिन अनीला को यह मंजूर नहीं है। पन्द्रह साल तक उसने चुनौती के कारण प्रेम की पीड़ा को झेला है। अनीला कहती है - "मैं····मैं चुनौती के कारण यह सब कुछ कर सकी। चुनौती के कारण मैंने इतने कष्ट उठाकर, इतनी वेदनाएँ सहकर, इस नर्सिंग होम का निर्माण किया, आज का दिन देखा।"[9]

डॉक्टर अनीला को इसी दिन का इन्तजार था। मन के अन्दर इतनी गहरी पीड़ा है, जिसका आधार है वही चुनौती। और उसी चुनौती ने आज अनीला के भीतर बदला लेने की भावना जाग उठी है। ऑपरेशन करते वक्त डॉ·अनीला को उसकी अंतरात्मा की आवाज सुनाई देती है, "डॉ·अनीला। शाबास, यह सुनहरा अवसर है। अपनी इच्छा पूरी करो। अपना बदला लो, नारी के अपमान का बदला

लो।···सुनो अनीला। सुनो। मैं मधुलक्ष्मी हूँ, मुझे भूलो मत। मैं ही तुम्हारे जन्म का तुम्हारी प्रगति का, तुम्हारी शोहरत का कारण हूँ। मैं नारी का बदला चाहती हूँ। मैं पुरूष को तड़पते देखना चाहती हूँ। बह जाने दो रक्त···निकल जाने दो प्राण···नस-नाडियों को बन्द मत करो···सईदा को परे हटा दो, वह तुम्हारी शत्रु है।"[10]

नारी प्रतिहिंसा की भावना से प्रेरित होकर कितना भयंकर रूप धारण करती है। लेकिन अन्त में अनीला में मानवता प्रेरित डॉक्टर प्रतिशोध नारी पर विजय प्राप्त करता है और मरीजा का ऑपरेशन सफल हो जाता है।

"गान्धार की भिक्षुणी" नाटक की आनन्दी प्रतिशोध भावना में जलती हुई दिखाई देती है। एक हूण सरदार ने उसकी इज्जत लुटी। इस घटना से उसके दिल पर गहरी चोट लग जाती है और एक दिन हूण सरदार के पीठ में कटार भोंक कर अपने अत्याचार का बदला लेती है। बदले का क्रोधाग्नि इतना तीव्र हुआ था कि हूण सदार के मरने पर भी उसके चेहरे पर, छाती पर, पेट पर, पैरों पर बडे बेरहमी से भोंकती जा रही थी। नाटक के अन्त में आनन्दी प्रतिहिंसा के बलिदान में परिणत होती हैं।

"टगर" नाटक की टगर पति शेखर द्वारा उपेक्षित हैं। उसके पति ने उसे आधुनिका न होने के कारण छोड़ दिया था। अपने पति की बेवफाई का बदला वह दुनिया की समस्त पुरूष जाति से लेना चाहती है। बदले की आग में टगर भभक उठती है ओर एक-एक पुरुष को बेनकाब करके बरबाद कर देती हैं। ठाकूर, नाजिम और माथुर जैसे पुरूष को अपने जाल में फँसाती है। लेकिन अन्त में वह अपने ही बिछाये जाल में फँसी जाती है। प्रतिशोध की आग में वह स्वयं को बरबाद कर देती है।

4· घुटन, दमन और अन्धविश्वास

नाटककार विष्णु प्रभाकरजी ने घुटन, दमन और अन्धविश्वास जैस नारी मन के महत्वपूर्ण पहलुओं का अपने नाटकों में चित्रण किया है। जो नारी मनोविज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। "युगे-युगे क्रान्ति" नाटक में रामकली अपनी दमित भावनाओं को लेकर जीवन बिताती है। उस जमाने में पति अपनी पत्नी का मुँह

नहीं देखा करता था। रामकली हमेशा घूँघट में ही रहती थी। इच्छा होने पर भी अपने पति कल्याणसिंह से नहीं मिल सकती थी। घर के बड़े लोगों के सामने बेटा और बहू नतमस्तक रहते थे। बहू घूँघट में और बेटा बाप की आज्ञा में रामकली और कल्याणसिंह दोनों को अपने मन को दबाकर रखना पडता था। रामकली इस घर में पूर्वजों की मान्यताओं के कारण घुटन का अनुभव करती है। रामकली अपने मन के बारे में कल्याणसिंह से कहती है, "लेकिन मन तो बहुत-सी ऐसी-वैसी बातों का करता रहता है। वे क्या सभी माननी चाहिए। हमारे बड़े कहते हैं कि मन के बस में नहीं होना चाहिए। उसकी आवाज नहीं सुननी चाहिए। उसे दबाना चाहिए। फिर भी यह सच है कि मेरा मन तुम्हें अच्छी तरह देखने को करता है।"[11] एक दिन कल्याणसिंह अपनी पत्नी रामकली का मुँह दिन के प्रकाश में देखने का साहस करता है। और पुराने जमाने की परम्परा तोड़ देता है इस प्रकार रामकली समाज की झूठीमान्यताओं में दमन एवं घुटन महसूस करती थी।

"अब और नहीं" नाटक की शान्ता अपने घर में घूट-घूटकर जीती है। उसे अपने ही मन को बन्दी बनाना पड़ा। कोई भी काम वह अपने मर्जी से नहीं कर सकती मानो वह अपने ही घर में कठपुतली बनी हुई है। जाल में फँसे हुए परिन्दे के समान शान्ता की अवस्था हो जाती है। वह हमेशा उदास रहती है न खुलकर हँसती है और न किसीसे बात करती है। वह एक मानसिक बीमार बनती है। वास्तव में वह एक अच्छी कलाकार थी। लेकिन घर में उसकी कला को प्रोत्साहन देना तो दूर, कला समाप्त करने पर सभी तुले हुए थे। शान्ता को अपनी स्वतंत्र सत्ता की पहचान न हो पाने का दर्द बहुत तीव्र होता है। इतना तीव्र दर्द होता है कि उसकी चेतना ही घायल हो जाती है। उसका सारा जीवन पति की इच्छा-अनिच्छा, विश्वास-अविश्वास से घिरा हुआ है। अपने परिवार के दमनीय वातावरण में शान्ता घुटन का अनुभव करती है। इस घुटन से छुटकारा पाने के लिए छटपटाती है। मुक्त होना चाहती है। डॉ॰मलिक से वह कहती है, "मैं विश्राम चाहती हूँ। मैं अवकाश चाहती हूँ। कोल्हू के बैल की तरह बहुत चक्कर काटे, बहुत पत्थर तोड़े, बागों में पानी दिया। देखो तो मेरे हाथ कितने सख्त हो गये हैं। देखो यह मेरे पैरों में बेडियों के कितने गहरे दाग हैं। मैं कैदखाने से अब बाहर जाना

चाहती हूँ। मैं मुक्ति चाहती हूँ। वह मुक्ति मुझे कोई भी नहीं देना चाहता। डॉक्टर साहब। मेरे चारों ओर हवा बन्द है। मैं मुक्त हवा चाहती हूँ।"[12] अन्त में शान्ता को दुषित वातावरण से छुटकारा पाने के लिए आत्महत्या करनी पड़ती है।

"बन्दिनी" नाटक में विष्णु प्रभाकरजी ने अन्धविश्वास पर गहरी चोट की है। अन्धविश्वास नारी-मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण पहलू है। आधुनिक युग में आज भी गाँवों और कस्बों में अन्धविश्वासों को लोग मानते हैं और ज्यादातर नारी जाति में इस मनोविकार का प्राबल्य होता है। इस नाटक में उमा अन्धविश्वास का शिकार बनी है। उसके ससुर कालीनाथ के सपने के कारण सब लोग उमा को देवी मानने लगते हैं। कालीनाथ तो पहले से ही एक नम्बर का अन्धविश्वासी है। वह अपनी बहु को साक्षात देवी मानता है। पति सुरेन्द्र और छोटे अनु को उमा से मिलने से कालीनाथ रोक लगाता है। अन्धविश्वासी कालीनाथ ने दबाव से भोली-भाली उमा को काली माता बनने के लिए मजबूर किया। उमा के सारे सपने चकनाचूर हो जाते हैं। उसे अपनी किस्मत पर रोना आता है। उसे लगता है कि पति इस मुसीबत से छुड़ाये। लेकिन कालीनाथ किसी की कुछ नहीं चलने देता। अब उमा के भीतर घुटन है। उमा की आशाएँ दमित हो जाती हैं। वह बेबस नारी दमित नारी बन जाती है। कालीनाथ के कारण उमा के चारों ओर अन्धविश्वास का चक्रव्यूह बन जाता है, जिसे तोड़कर उमा को उस से बाहर निकलने वाला कोई नहीं था। अब उमा की सम्पूर्ण चेतना को अन्धविश्वास ने ग्रस लिया है। हालांकि उमा भी इस मानसिक रोग का शिकार बनती है। और अपने को साक्षात् देवी कालीमाता का रूप समझती है। वह पति सुरेन्द्र से कहती है, "मैं महाकाली हूँ और तुम मेरे पति शिवशंकर हो तो, फिर यहाँ से भागे क्यों ? दोनों मिलकर हम सारे संसार का कल्याण कर सकते हैं। नहीं मैं नहीं जाऊँगी। मैं यही रहूँगी। तुम भी यही रहो। जब महाकाली रह सकती हैं तो उसके पति शिवशंकर भी रह सकते हैं।"[13]

उमा को लगता है कि मैं लोगों के दुख-दर्द दूर कर देती हूँ। पूंटी के बच्चे की बीमारी और विश्वेश्वरी की बेटी की मुसीबत मेरी शक्ति के कारण ही टल गयी, ऐसा उमा को लगता है और इन घटनाओं से उमा का अन्धविश्वास और भी दृढ़ हो जाता है। लोग श्रद्धा के भाव से उसके दर्शन और पूजा करते। लेकिन सुरेन्द्र को यह बिल्कुल पसन्द नहीं था। वह हर तरह से उमा को समझाने की कोशिश करता है। लेकिन उमा अपने पति की एक नहीं सुनती। उमा का मन अन्धविश्वास के रोग से ग्रस्त है। अनु जब बीमार पडता है तो सब लोगों को लगता है कि उमा अनु को जीवनदान देगी। लेकिन उमा अनु को बचा नहीं सकी और तभी सभी लोगों की श्रद्धा को ठेंस पहुँचती है। सभी उमा को गालियाँ देने लगते हैं। इस घटना से उमा के दिल पर गहरी चोट लग जाती है और उमा अपने को दोषी मानती है। इसी वक्त सभी लोगों के साथ-साथ उमा भी अन्धविश्वास के इस मानसिक रोग से मुक्ति पाती है।

इस प्रकार विष्णुजी ने अपने इस मनोवैज्ञानिक नाटक में नारी-मनोविान का सफल चित्रण किया है।

5. <u>स्वेच्छाचार एवं मनमाने क्रिया-व्यापार</u>

आधुनिक युग में नारी स्वेच्छाचार एवं मनमाने क्रिया-व्यापार की ओर बढ़ने लगी है। नारी अपना जीवन यापन मानवीय सम्बन्धों को काटकर स्वार्थ और वैयक्तिक कटघरों में करना चाहती है। वह स्वातंत्र्य का अर्थ स्वेच्छाचार एवं मनमाने क्रिया-व्यापार मानती है। समाज के प्रस्थापित आदर्श, मान्यताएँ निरर्थक मानकर नई मान्यताओं में विश्वास करती है। स्वेच्छा से अपना जीवन व्यतीत करना ही जिन्दगी की यह एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है।

"टूटते परिवेश" नाटक की मनीषा आधुनिक फ़ॅशनपरस्त नारी है। उसके वस्त्र आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण है। साडी, सैंडल, बैग और लिपस्टिक जैसे सर से पाँव तक एक ही रंग का मॅचिंग है। वह दुनिया की किसी भी बात की परवाह नहीं करती। वह अपना भला-बुरा खुद ही सोचना चाहती है। अपनी इच्छा से ही कहीं भी आना-जाना चाहती है। जो अपने को ठीक लगे वही करना चाहती हैं। अपने भाग्य का निर्णय करना और अपना मार्ग चुनने का अधिकार किसी और

को नहीं देना चाहती। जब उसके अधिकार को ठेंस पहुँचती है तो मनीषा तुरन्त माँ-बाप को छोड़कर घर से निकल जाती है। और क्रिस्टोफर से शादी करने के बाद उसकी खबर अपने पिता विश्वजीत को फोन पर देती है। इस प्रकार मनीषा मनमाने क्रिया-व्यापार करने वाली लड़की है।

दीप्ति मनीषा की छोटी बहन है। वह भी अपनी दीदी की तरह मुक्त जिंदगी से प्यार करती है। आधी बाँह का लाल स्वेटर और बेलबॉटम पहनती है। उसके केश मुक्त हैं। वह हमेशा हाथ में कंघा लिये बालों को इधर-उधर बिखेरती रहती है। जैसा उसका मन चाहे वैसा ही करना चाहती है। पुरानी संस्कृति उसे बिल्कुल पसन्द नहीं है। कम्प्युटर की दुनिया से उसे प्यार है। बुर्जुआ सभ्यता की हर बात से वह नफरत करती है। वह होस्टल में जाकर रहती है, क्योंकि स्वतंत्र रहना उसे अच्छा लगता है। इसी प्रकार जरीना भी स्वतंत्रता से प्यार करने वाली विवेक की मित्र है। विवेक जरीना के साथ विश्वयात्रा के लिए जाता है। लेकिन जरीना उसे धोखा देती है। विवेक के प्रति जरीना का सच्चा प्यार नहीं था। क्योंकि जरीना विवेक के प्रेम-बन्धन में रहना नहीं चाहती थी। उसे सिर्फ प्रेम करना ठिक लगता है, बन्धन में रहना नहीं। इस तरह मनीषा, दीप्ति, जरीना आदि मुक्त संचार करने वाली नारियाँ हैं।

"युगे-युगे क्रान्ति" नाटक में रिता यौनाचारी एवं स्वेच्छाचारी लड़की है। वह आधुनिक फशनपरस्त और पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित है। वह विवाह को बन्धन मानती है। इसलिए वह किसी के भी साथ संगिनी बनकर रहना पसन्द करती है, पत्नी बन कर नहीं। रीता अपने जीवन में यौनाचार को महत्व देती है। उसे केवल स्त्री और पुरूष, नर और मादा की सत्ता में ही विश्वास है। रीता जैनेट से कहती है, "ओह गॉड। आपके विचार कितने दकियानूसी है। मैं कहती हूँ, मुझे अनरूद्ध अच्छे लगते हैं। मेरा मन उनके साथ रहने को करता है। मैं रहती हूँ। जब तक हम एक दूसरे को प्रेम कर सकेंगे, रहेंगे। नहीं कर सकेंगे तो अलग हो जायेंगे।"[14]

आधुनिक युग में पश्चिमी देशों की तरह यौनाचार एवं स्वेच्छाचार हवस मिटाने की बदनुमा शक्ल में ढल चुका है। आज भूख के बाद सेक्स मानव की सबसे बडी आवश्यकता है। आज की आधुनिक नारियाँ यौनाचार का समर्थन करती हैं। वह सारी पुरानी नैतिकता को भुलाकर स्वतंत्र यौनाचार में जीवन का सार ढूँढती है और यौन-विकृतियों का शिकार हो जाती है।

6· हृदय-परिवर्तन

नारी करूणा और दया की मूर्ति है। वह अपने जीवन में नाना प्रकार की यातनाएँ सहन करती हैं। वह गहरी व्यथा के कारण अन्याय के प्रति विद्रोह करती है। शोषण करने वाले पुरूष जाति के प्रति उसके मन में तीव्र प्रतिशोध की भावना पनपती है। वह प्रतिहिंसा की भावना से प्रेरित होकर एक भयंकर रूप धारण करती हैं, और एक दिन वह जीवन के ऐसे मोड़ पर आती है, जहाँ उसका परिवर्तित मन अपने सहज प्रकृत स्वभाव का परिचय देता है। नारी सहृदय होने के कारण पारम्पारिक सद्भावना और प्रेम चाहती हैं। नारी मनोविज्ञान की यह एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

श्री विष्णु प्रभाकरजी ने अपने नाटकों में नारी-मनोविज्ञान का चित्रण करने के साथ-साथ मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया है। वास्तव में उनके मन पर गांधीवाद का गहरा प्रभाव था। इसी कारण आपने अपने कई नाटकों में महात्मा गांधी की अहिंसा के विचार भी रखे हैं। आपने नैतिक मूल्यों को पहचानने में गांधीवाद से ही सहायता ली है। हमारे कहने का मतलब यह है कि नाट्यकार विष्णु प्रभाकरजी ने नारी मनोविज्ञान का सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए नारी के परिवर्तित मन में प्रतिशोध की तीव्र हिंसात्मक भावना पर मानवता प्रेरित प्रेम की ज्यों अहिंसात्मक भावना विजय प्राप्त करती है। वास्तव में वह विष्णु प्रभाकरजी को अपनाया हुआ गांधीजी का अहिंसात्मक दृष्टिकोण है। अतः विष्णु प्रभाकरजी को नारी की मनोग्रंथियों का उद्घाटन कर अहिंसा, प्रेम एवं शान्ति से मानवीय कष्ट का निवारण किया है।

डॉ· अनीला सतीशचन्द्र शर्मा की परित्यक्ता पत्नी है। उसके मन में अपने पति के प्रति बदले की भावना तीव्र है। इसलिए ऑपरेशन के वक्त अपनी सौतन

को मारकर सतीशचनद्र को तडपता देखना चाहती है। लेकिन अनीला परित्यक्ता पत्नी होने के साथ-साथ एक ख्याति प्राप्त डॉक्टर भी है। इसीकारण अनीला के मन में उपचार की समस्या को लेकर कर्तव्य और प्रतिशोध की भावना में भयानक संघर्ष होता है। एक ओर डॉ·अनीला को अपनी सौत मरीजा उषा के प्रति आकर्षण है तो दूसरी ओर घृणा एवं तिरस्कार। डॉ·अनीला एक कर्तव्यदक्ष डॉक्टर है। उसे अन्य बातों से ज्यादा अपना फर्ज प्यारा है। अतः डॉक्टर की इसी कर्तव्य परायण भावना के कारण डॉ·अनीला का मन परिवर्तन होता है। अनीला के मन में उद्भूत प्रतिशोध, प्रेम और कर्तव्य में से प्रेम और कर्तव्य की विजय होती है। अनीला प्रतिकार की दुर्बलता को दबाती है और मरीजा का सफल ऑपरेशन कर देती है। अनीला एक कर्मठ बुद्धिवादिनी नारी के प्रतिकार का आदर्श उपस्थित करती हुई शर्मा से कहती है, "आपकी पत्नी का ऑपरेशन सफल हुआ। वह जल्द ही तगड़ी हो जाएगी। बधाई।···आओ केशवा।"[15]

"टगर" नाटक की टगर भी पति-परित्यक्ता नारी है। उसके दिल में समस्त पुरूष जाति के प्रति नफरत है। वह अपने अपमान का बदला सभी पुरूष से लेना चाहती है। एक-एक पुरूष को वह अपने चंगुल में फँसाती है। सबको बेनकाब कर गिरफ्तार करवाती है। लेकिन जब उसे डॉक्टर की पत्नी विमला से यह मालूम होता है कि नाजिम साहब ने टगर को बदनाम करने के लिए उसके पहले पति शेखर को बुलाया था। इस बात को जानते ही टगर का हृदय परिवर्तन होता है। उसे लगता है कि मैं अपने ही बिछाये जाल में फँस गई हूँ। अब टगर में किसी और की होने की आशा भी नहीं है। इस तरह प्रभाकरजी ने मनोविज्ञान के धरातल पर नारी के हृदय परिवर्तन का चित्रण किया है।

"गान्धार की भिक्षुणी" नाटक में भी आनन्दी का हृदय परिवर्तन दिखाया है। लेकिन इस नाटक में "डॉक्टर" या "टगर" की तरह नारी का मन परिवर्तन होकर अहिंसा की ओर नहीं ले जाता, बल्कि कायरता को ठुकराकर अन्याय का प्रतिकार करता है। हुणों ने मालव जनता पर मनमाने अत्याचार किये थे। उस अत्याचार का शिकार आनन्दी हुई थी। एक हूण सरदार ने आनन्दी को अपनी वासना का शिकार बनाया था। आनन्दी शीलभ्रष्ट हो जाती है। वह अपने को कलंकित समझती

है। उसके पेट में हूण सरदार का जो बच्चा पल रहा है, उसे वह पाप की निशानी समझती है। अपने को हीन मानकर मौत को गले लगाना चाहती है। लेकिन दशपुर का विजयपति यशोधर्मन उसे आत्महत्या करने से रोक कर बदला लेने की राह सुझाता है। वह आनन्दी से कहता है, "आत्महत्या करके अपने कलंक को धो देना बहुत आसान है, पर उस दर्द को सहने की यातना से गुजर कर प्रतिशोध लेना उतना ही कठिन है। अन्याय का प्रतिकार आत्महत्या से नहीं हो सकता है, हो सकता है प्रतिशोध से।"[16]

यशोधर्मन के इन शब्दों से आनन्दी का हृदय परिवर्तन होता है और वह हूण सरदार से बदला लेने की मन में ठान लेती है। प्रतिशोध की भावना से उद्भूत आनन्दी अपनी मन की कायरता को हमेशा-हमेशा के लिए तिलांजलि देती है। नाटक के अन्त में उसकी देशप्रेम की भावना प्रतिहिंसा के बलिदान में परिणत हो जाती है। नाट्यकार विष्णु प्रभाकरजी ने नारी हृदय के परिवर्तन द्वारा नारी मनोविज्ञान का विश्लेषण किया है।

7· <u>सुप्त-कामेष्णा</u>

आधुनिक युग में प्रेम-सम्बन्धों के साथ-साथ काम-सम्बन्धों में भी परिवर्तन होने लगा है। प्रत्येक मानव के जीवन में काम-सम्बन्ध की अत्यावश्यक है। इसी सम्बन्ध के कारण स्त्री और पुरूष के बीच में आकर्षण पैदा होता है। उस आकर्षण में वासना की तीव्र लालसा होती है। यह लालसा अतृप्त होती है। एक बार उद्दीप्त होने पर वह कभी नहीं बुझती। काम-तुष्टि के लिए स्त्री या पुरूष अन्य किसी से सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं और अपनी सुप्त-कामेष्णा को बुझाते हैं। श्री विष्णु प्रभाकरजी ने इसी सुप्त कामेष्णा को नारी-मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण पहलू बताया है।

"डॉक्टर" नाटक की अनीला को पति सतीशचन्द्र ने त्याग दिया था। उस चुनौती को स्वीकार करते हुए अनीला डॉक्टर बन जाती है। लेकिन उसके दिल में वह यातना आज भी है, जिसे उसके पति ने दी है। उस दर्द की यातना को सहती हुई वह अपने नर्सिंग होम में मशीन की तरह काम करती रहती है। इस

काम में हमेशा डॉक्टर केशव उसके साथ रहता है। डॉ·केशव के संसर्ग में आने के कारण अनीला के मन में उसके प्रति प्रीती-तन्तु जुड़ जाता है। डॉ·केशव के प्रति अनीला के दिल में प्यार का भाव उमड़ता है। डॉ·केशव उसे अपना लगने लगता है। अपने विफल वैवाहिक जीवन के कारण उसके अन्तर्मन में सुप्त कामेष्णा समाप्त नहीं होती। वह डॉ·केशव के बारे में कहती है, "केशव। डॉक्टर केशव। दादा सब कुछ जानते हैं। यह कैसी विचित्र बात है कि कुछ बाते मैं दादा से साफ-साफ नहीं कह सकती···पर डा·केशव से कह देती हूँ। कुछ भी नहीं छिपा पाती। दादा अपने हैं पर केशव तो जैसे····"[17]

डॉ·अनीला पाँच वर्षों से प्यार के लिए तरस रही है। लेकिन लोक-लाज के भय से वह अपने मन की अतृप्त भावना को छुपाती रहती है। डॉ·केशव के वैवाहिक प्रस्ताव को ठुकराती रहती है। वास्तव में डॉ·केशव के संसर्ग से अनीला के यौन-सुलभ विचारों में क्रान्ति होती है और इसका प्रमुख कारण है पति सतीशचन्द्र के प्रति घृणा एवं तिरस्कार। इस प्रकार विष्णु प्रभाकरजी ने अनीला की यौन-सुलभ क्रिया-प्रतिक्रियाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है, ज्यों नारी-मनोविज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

8· <u>कर्तव्य-परायणता</u>

श्री विष्णु प्रभाकरजी नारी को कर्तव्य परायण मानते हैं। प्राचीन काल से आज तक पुरूष ने नारी पर अपना अधिकार जमाया है और नारी इसे अपना कर्तव्य समझकर निभाती रही है। नारी ने अपने कर्तव्यनिष्ठा के लिए त्याग और बलिदान किया। जिससे हमारे देश की संस्कृति को श्रेष्ठ समझा गया। समस्त परिवार का पालन करना उसने अपना पुनित कर्तव्य समझा। फिर भी पुरूष ने उसे परिवार और समाज में गौण ही स्थान दिया। लेकिन नारी ने अपने सभी रूपों में कर्तव्य भावना का सबूत दिया है। नाटककार विष्णु प्रभाकरजी ने अपने कुछ नाटकों के माध्यम से नारी की कर्तव्य भावना का मनोवैज्ञानिक विवेचन किया है।

"कुहासा और किरण" नाटक की सुनन्दा और प्रभा दोनों भी कर्तव्यनिष्ठ नारियाँ हैं। प्रभा साहित्यकार है और सुनन्दा नेता कृष्णचेतन्य की सेक्रेटरी है। दोनों

भी साहसी, निर्भिक और सत्यप्रिय आदर्श नारियाँ हैं। नेता कृष्णचैतन्य, समाज सुधारक उमेशचन्द्र अग्रवाल और सम्पादक बिपीन बिहारी ये तीनों भी भ्रष्टाचारी हैं। जब सुनन्दा और प्रभा को उनके राज का पता चलता है तो दोनों भी इन भ्रष्टाचारियों को बेनकाब करती हैं। सी·आय·डी·टमटा साहब की मदद से प्रभा तीनों को गिरफ्तार करवाती है। अमूल्य और मालती को इन्साफ दिलाती है। इस प्रकार प्रभा और सुनन्दा देश और समाज में फैले भ्रष्टाचार के कुहासे को नष्ट करती है और डॉ·चन्द्रशेखर के देश के प्रति रहे अधुरे कर्तव्य को ये दोनों नारियाँ पूर्ण करती हैं।

"टूटते परिवेश" नाटक में करूणा अपने समस्त परिवार की गृहस्वामिनी है। इस नाटक में वह माँ और पत्नी का कर्तव्य निभाती है। वह चाहती है कि, उसके बच्चें हँसी-खुशी से रहे। लेकिन करूणा के सभी बेटे और बेटियाँ एक-एक करके घर से निकल जाते हैं। करूणा उनको समझाने की बहुत कोशिश करती हैं। उनके लिए कड़ी मेहनत करके उनको खुश देखना चाहती है। लेकिन सभी बच्चों को अपने माँ-बाप का खयाल ही नहीं है। सारा परिवार बिखर जाता है। करूणा दुखिनी बनती है। अब उसे सिर्फ अपने पति का ही सहारा है। लेकिन एक दिन उसका पति भी चुपचाप, किसी को बिना बताये घर से निकल जाता है। करूणा घबरा जाती है और अपने सभी बच्चों को बुलाती है। लेकिन उसे अपने पति की चिन्ता खाने लगती है। सभी बच्चों के सामने करूणा उनके पिता की हालत का वर्णन करती है। लेकिन अपना पिता घर से जाने से कोई भी बच्चा टस से मस नहीं होता। जब विश्वजीत घर लौटता है तो सबसे ज्यादा करूणा को खुशी होती है। अपने सभी परिवार को साथ में देखकर वह फूले नहीं समाती। वह सबके लिए हलवा बनाना चाहती है। इस प्रकार करूणा अपनी माँ और पत्नी दोनों रूपों में कर्तव्य को निभाती हैं।

"डॉक्टर" नाटक की नायिका अनीला को उसके पति ने कम पढ़ी-लिखी होने के कारण छोड दिया था। उसी चुनौती को स्वीकार करके अनीला डॉक्टर बन जाती है। डॉ·अनीला को अपने कर्तव्य के प्रति असीम श्रद्धा होने के कारण जल्द ही उसका नर्सिंग होम रूग्णों का आशा स्थान बन जाता है। जब अपने पति के

दूसरे पत्नी के ऑपरेशन का समय आता है, तब डॉ॰अनीला के मन में प्रतिहिंसा की भावना और ख्याति प्राप्त डॉक्टर होने के नाते उसकी कर्तव्य भावना में भयानक संघर्ष होता है। लेकिन अनीला में मानवता प्रेरित डॉक्टर प्रतिशोध नारी पर विजय प्राप्त करता है। नाटककार ने यहाँ व्यक्तिगत भावों पर कर्तव्य की विजय दिखाकर कर्तव्य की श्रेष्ठता का चित्रण किया है, ज्यों नारी मनोविज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

9· <u>पागलपन एवं विक्षिप्तता</u>

श्री विष्णु प्रभाकरजी के नाटकों के अध्ययन से पागलपन एवं विक्षिप्तता का स्वरूप मालूम होता है। नारी के जीवन में कभी-कभी कुछ ऐसी घटनाएँ घटित होती है जिससे नारी के हृदय पर प्रबल आघात होकर वह पागल एवं विक्षिप्त बन जाती है।

"केरल का क्रान्तिकारी" नाटक की अम्मुकुट्टी देशप्रेमी नारी है। वह केरल का क्रान्तिकारी वेलुतम्पी दलवा से प्यार करती है। वेलुतम्पी दलवा भी उसे बहुत चाहता है। अम्मुकुट्टी को अपनी चेतना मानता है। लेकिन दोनों भी अपने प्यार से बढ़कर देश को चाहते हैं। देश का प्यार ही उनके लिए सबकुछ है। उन्होंने निश्चय किया था कि वे शादी नहीं करेंगे और जीवन भर राज्य की सेवा करेंगे। एक दिन जब फिरंगीयों में और दलवा में मुठभेड़ होती है, तो दलवा फिरंगियों के हाथ पड़ने से पहले ही अपनी आहुती देता है। दलवा की लाश को देखकर अम्मुकुट्टी के दिल पर सदमा पहुँचता है। इस सदमे के कारण अम्मुकुट्टी पागल बन जाती है। पागल बनकर इधर-उधर इशारें करती हुई नाचती है, गाती हैं। फिरंगियों ने दलवा की लाश को बेइज्जत करके अम्मुकुट्टी के प्यार का मज़ाक उडाया था। लेकिन इस मज़ाक ने अम्मुकुट्टी का दिल चूर-चूर हो जाता है। अम्मुकुट्टी इस पागलपन में भी अपने प्रेमी दलवा का अधुरा काम विद्रोह के गीत गाती हुई करती है। मानो देशभक्ति का जुनून उस पर सवार है। इस तरह नाटककार ने अम्मुकुट्टी के पागलपन का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

"कुहासा और किरण" नाटक की मालती एक पागल औरत है। वह एक गरीब बदनसीब और किस्मत की मारी हुई औरत है। उसका पति डॉ·चन्द्रशेखर एक सच्चा देशभक्त था। लेकिन इस देशभक्त को गरीबी का तूफ़ान खा जाता है। पति के मृत्यु से मालती के दिल पर गहरी चोट लगती है। राजनीतिक पीड़ितों के पेन्शन के लिए वह कागजात लेकर तीन साल से दर-दर भटकती है लेकिन उसे पेन्शन नही मिलती। फिर भी उसे अपने पेन्शन की चिन्ता रहती है। अनेक नेताओं के सामने वह गिड़गिडाकर पेन्शन की भीख माँगती है। जब सचमुच उसके पेन्शन का प्रबंध हो जाता है, तो मालती को विश्वास नहीं होता क्योंकि वह इस पेन्शन के चक्कर में पागल बन जाती है। किसी भी आम आदमी को नेता कहकर पुकारती है। पेन्शन के बारे में उसे पूछती रहती है। सुनन्दा और प्रभा से उसकी हालत देखी नहीं जाती। उन्हें विश्वास होता है कि मालती बुआ अब ठीक नहीं हो सकती। मालती की पीड़ा गहरी थी। और इस पीड़ा को सहते-सहते उसका मन टूट गया था और वह पागल एवं विक्षिप्त बन गई थी।

"डॉक्टर" नाटक में नीरू का विक्षिप्त नारी के रूप में चित्रण किया गया है। नीरू डॉ·अनीला के नर्सिंग होम की सनकी मरीजा है। ज्यों अपने विक्षिप्तता के कारण टीका करती रहती है। वह हमेशा किसी न किसी से बोलती रहती है। उसके इसी स्वभाव के कारण अस्पताल के सभी लोग उसे पागल कहते हैं। लेकिन अस्पताल के सभी खबरों से वह वाकिब रहती है। हर एक आदमी को वह अपनी नजर अन्दाज से देखती है और जब किसी भी आदमी के बारे में वह बाते करती हैं, तो उसकी बातों की सब हँसी उड़ाते हैं। नीरू जबान से तेज है लेकिन दिल की अच्छी है। लेकिन अस्पताल के सारे लोग नीरू की ओर पागल एवं विक्षिप्त मरीजा की दृष्टि से देखते हैं।

निष्कर्ष

1· श्री विष्णु प्रभाकरजी ने अपने नाटकों में नारी मनोविज्ञान का सफल चित्रण किया है।

2· उन्होंने मनोविज्ञान की धरातल पर नारी के विविध मनोविकारों को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

3· नाटककार विष्णु प्रभाकरजी सचमुच नारी मनोविज्ञान के पारखी हैं क्योंकि उन्होंने अपने सभी नाटकों में मध्यमवर्गीय नारी के मन को जाना-पहचाना और ज्यों उन्हें नज़र आया उसीको लिख दिया।

4· नारी-मनोविज्ञान के अंतर्गत आपने अपने नाटकों में नारी के अन्तर्मन और चेतनमन का संघर्ष दिखाया है।

5· आपके नाटकों की स्थितियाँ मनोवैज्ञानिक हैं। लेकिन उसकी पृष्ठभूमि में सामाजिक नारी का जीवन छिपा हुआ है।

6· मनोविज्ञान के द्वारा आपने नारी के जीवन की कहानी से हमें अवगत कर दिया है।

7· अतः विष्णु प्रभाकरजी ने मनोविज्ञान द्वारा नारी के व्यक्तित्व की कई बारीकियों पर प्रकाश डाला है।

<u>संदर्भ-सूचि</u>

1. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक विचार-तत्व - डॉ. अवधेशचन्द्र गुप्त, पृ. 145

2. बन्दिनी - विष्णु प्रभाकर, पृ. 41

3. वही, पृ. 42

4. वही, पृ. 75

5. नवप्रभात - विष्णु प्रभाकर, पृ. 25

6. वही, पृ. 31-32

7. डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ. 37

8. हिन्दी समस्या नाटक - डॉ. मान्धाता ओझा, पृ. 154

9. डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ. 101

10. वही, पृ. 125-126

11. युगे-युगे क्रान्ति - विष्णु प्रभाकर, पृ. 17-18

12. अब और नहीं - विष्णु प्रभाकर, पृ. 61

13. बन्दिनी - विष्णु प्रभाकर, पृ. 59

14. युगे-युगे क्रान्ति - विष्णु प्रभाकर, पृ. 68

15. डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ. 130

16. गान्धार की भिक्षुणी - विष्णु प्रभाकर, पृ. 53

17. डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ. 72